3

खुशबू आज भी याद है...

पाठ-प्रवेश

समय निरंतर आगे बढ़ता जाता है। हम भी समय के साथ अपने जीवन में आगे बढ़ते जाते हैं और पीछे छूट जाती हैं, स्मृतियाँ। कुछ स्मृतियाँ कटु अनुभवों से भरी होती हैं जिन्हें हम याद नहीं करना चाहते, परंतु कुछ स्मृतियाँ इतनी मधुर होती हैं जो हमारे संपूर्ण जीवन पर अपनी छाप छोड़ जाती हैं। यह संस्मरण ऐसी ही स्मृतियों से परिपूर्ण है।

बात उस समय की है, जब मैं बुनियादी[1] स्कूल में पढ़ता था। ताजवीर मेरा पक्का दोस्त था। ताजवीर मुझसे लंबा था। वह पढ़ने-लिखने में होशियार था। फिर भी वह मेरी नकल करता। मैं जैसा करता, वह भी वैसा ही करता। मैं घर में पढ़ने लगता तो वह भी पढ़ने बैठ जाता। मैं घूमने निकलता तो वह भी पीछे-पीछे आ जाता।

यह और बात थी कि ताजवीर मेरी बहुत मदद करता था। हम दोनों एक-दूसरे से अपनी बातें साझा करते थे। हम एक-डेढ़ घंटा पैदल चलकर स्कूल पहुँचते थे। दूर-दूर तक मोटर मार्ग नहीं था। गाँव से कोई शहर जाता, तो बूढ़े-बच्चे और जवान मुँह-अँधेरे उसे विदा करने जाते। गाँव में बनी चीज़ों की छोटी-छोटी पोटलियाँ बनाई जाती थीं। इन्हें सिर पर उठाकर मोटर मार्ग तक छोड़ने जाने का काम हम बच्चों का ही होता था।

उन दिनों शहर जाने वाले का सामान छोड़ना गर्व की बात समझी जाती थी। बदले में पचास पैसा और एक रुपये का नोट बख़्शीश[2] मिला करती थी। शहर से गाँव आने वाली बस शाम को पहुँचती थी। यही बस सुबह शहर लौट जाया करती थी। हमें बस देखने का मौका कभी-कभी ही मिलता था। स्कूल में आकर हम बताते थे कि इस बार की बस का नंबर फलाँ-फलाँ था।

मेरे गुरु जी हमारे ही गाँव के थे। छोटा हो या बड़ा, गाँव का हर आदमी उन्हें 'गुरु जी' ही कहता था। गुरु जी के बाल झक सफ़ेद हो चुके थे। वे मोटा चश्मा पहनते थे। खादी का कुरता और चौड़ी मोहरी वाला लंबा खद्दर का पायजामा। यही उनका पहनावा था। उनके कंधे पर हमेशा एक झोला टँगा रहता था। दाएँ हाथ में लंबी छड़वाला काला छाता उनकी पहचान था। वे कभी-कभी उसे गरदन के पीछे कुरते में खोंसकर चलते थे।

वे फल लगाते थे। क्यारी बनाते थे। जंगल जाकर लकड़ी काटते थे। जड़ी-बूटियों का उन्हें अच्छा ज्ञान था। गाँव की दुख-तकलीफ़ों में खड़े होते थे। शादी-ब्याह में सबसे पहले और सबसे आगे खड़े रहते थे। दूर-दूर तक वे अकेले पढ़े-लिखे और संवेदनशील[3] इनसान माने जाते थे। उनके सैकड़ों विद्यार्थी थे, जिन्हें अक्षर ज्ञान देने वाले वे पहले अध्यापक थे।

शब्दार्थ

1. प्रारंभिक; 2. इनाम, पुरस्कार; 3. भावुक

मेरे गुरु जी रिटायर होने वाले थे। वे अकसर हमसे कहते–"अरे! तुम्हारे बाप-दादाओं को भी मैंने पढ़ाया है। अब बहुत हो गया। अब तुम्हें पढ़ाने शहर से कोई नए 'मास्साब' आएँगे। तब तुम्हें पता चलेगा कि मास्टर कैसे होते हैं!"

हमें लगा कि गुरु जी यूँ ही मज़ाक कर रहे हैं। 'रिटायर' शब्द हमारे शब्दकोश में जो नहीं था। फिर वही हुआ, जो गुरु जी ने कहा। एक दिन अचानक मैंने सुना कि नए मास्टर जी आ गए हैं। राम रतन सिंह राव। इतना लंबा नाम भी किसी का हो सकता है! मैं चौंक पड़ा था। नए मास्साब गुरु जी के यहाँ ठहरे हैं। यह सुनते ही मैं दौड़कर गुरु जी के घर जा पहुँचा। ताजवीर मुझसे पहले वहाँ खड़ा मुसकरा रहा था। वह नए मास्साब को पानी पिला रहा था। मुझे ताजवीर का मुझसे पहले वहाँ पहुँचना अच्छा नहीं लगा।

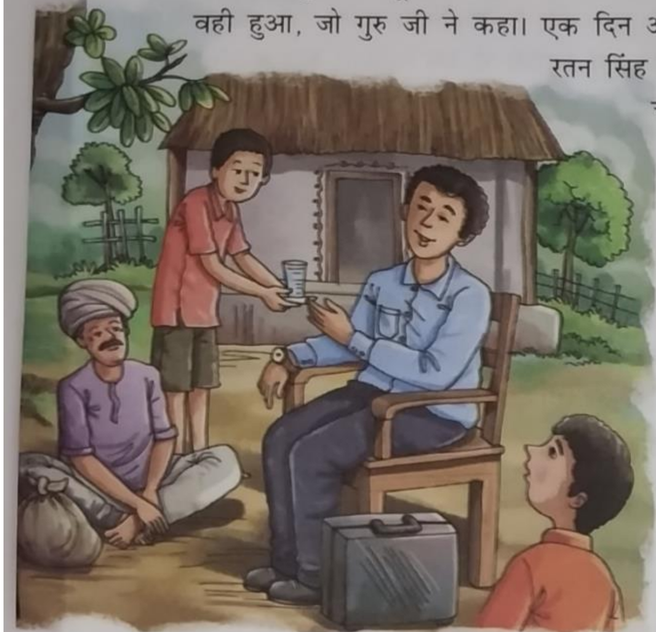

वह शाम का समय था। खलिहान में गांधी आश्रम की नई दरी बिछाई गई थी। नए मास्साब को हम बच्चों ने आसानी से पहचान लिया था। वे पैंट-कमीज़ और भूरे चमड़े के जूते पहने हुए थे। ऐसे जूते मैंने पहली बार देखे थे। मास्साब का रंग गोरा था। सिर के काले बाल घुँघराले थे। उनके पास चमचमाता हुआ सूटकेस था। वे कुरसी पर बैठे हुए थे। हमारे गुरु जी पालथी मारकर ज़मीन पर बैठे थे। हमने पहली बार ऐसा आदमी देखा था जिसके चेहरे पर न दाढ़ी थी, न ही मूँछ।

राम रतन सिंह राव मुझे पहली ही नज़र में भा गए थे। पहले दिन उन्होंने हम सभी से हमारा नाम पूछा। घर-परिवार के बारे में पूछा। कितने भाई हैं? कितनी बहनें हैं? पिता जी क्या करते हैं? घर में और कौन-कौन हैं? पहले दिन हम बच्चे अपने ही बारे में बताते रहे। छुट्टी का घंटा जब बजा, तब पता चला कि सारा दिन बीत गया। "मास्साब की बाईं कलाई पर सोने की घड़ी है।" ताजवीर ने धीरे-से मुझे बताया था। ताजवीर मास्साब के बारे में बहुत सारी बातें बता रहा था। मसलन[4], उनके पास क्या-क्या है। वे ढेर सारी रंग-बिरंगी किताबें लेकर आए हैं। उनके पास अखबार भी है।

अख़बार! यह शब्द मेरे लिए नया था। मैंने चाहकर भी ताजवीर से अख़बार के बारे में नहीं पूछा। घर लौटा। खाना खाया। फिर मैं सीधे मास्साब के घर की ओर चल पड़ा। मास्साब को गाँव के सबसे ऊपर वाला एक खाली मकान रहने के लिए दिया गया था।

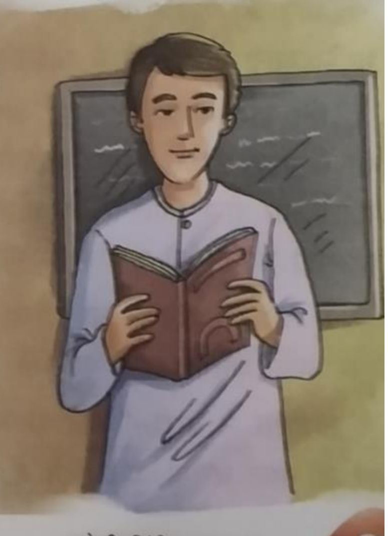

नए मास्साब आए दिन शहरों के किस्से सुनाते। उन्होंने हमें अख़बार के बारे में बताया। बच्चों की पत्रिकाओं के बारे में बताया। सिनेमा के बारे में बताया। रेल के बारे में बताया। वे ही थे जिन्होंने हमें कैमरा दिखाया। दूरबीन दिखाई। गाँव में ढिबरी और काँच की शीशी पर कैरोसीन लैंप

शब्दार्थ 4. जैसे

जलते थे। वे ही तो थे जो सबसे पहले लालटेन और गैस लाइटर लेकर गाँव में आए थे। मास्साब ने ह हमें बताया था कि शहर में आदमी-आदमी को खींचता है। हाथ-रिक्शा और साइकिल-रिक्शा के बारे उन्होंने ही बताया। वे हर चीज़ का चित्र ब्लैकबोर्ड पर बनाते। उनके बनाए चित्र जीवंत[5] तो नहीं होते थे लेकिन हमें उस अनदेखी वस्तु की छवि बनाने में बेहद मददगार होते थे। उनकी बातों में जादू हुआ करता था। पढ़ाते-पढ़ाते वे किस्से-कहानियाँ सुनाने लग जाते। मुझे याद है, उन्होंने कहा था कि एक दिन वह भी आएगा, जब मशीन से नोट निकला करेंगे। जब दूर बैठे हुए आदमी से हम साक्षात[6] बात कर रहे होंगे। एक दिन आएगा, जब चाँद पर भी शहर बनेंगे।

फिर वहीं लौटते हैं, जब मैं सीधा मास्साब के घर की ओर चल पड़ा था। मैं दबे पाँव मकान के मुख्य द्वार पर खड़ा था।

"कौन?" मास्साब ने भीतर से ही पूछा। मैं भाग जाने को हुआ।

"अरे! मनोहर तुम? चले आओ। भागते क्यों हो?" मास्साब जैसे सब समझ गए थे।

मास्साब की रसोई में भात पक रहा था। भात की खुशबू मुझे मदहोश कर रही थी। हम गाँववाले मोटा अनाज खाते थे। कभी तीज-त्योहार में ही चावल बनता था। वह भी सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान का मोटा चावल। मैं मास्साब के पास जो नई चीज़ें थीं, उन्हें देखने आया था। मुझे लगा था कि वे बड़े चाव से मुझे एक-एक चीज़ के बारे में बताएँगे। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

मास्साब प्याज और मूली काट रहे थे। सलाद बना रहे थे। मैं तो चूल्हे की आग पर पक रहे भात की खुशबू को ज़ोर-ज़ोर से साँस लेकर अपने भीतर सहेज रहा था। मैं लंबी साँस लेते हुए आँखें बंद कर रहा था। मास्टर जी ने देख लिया। वे हँसते हुए बोले–"खाना खाया कि नहीं?" मैंने 'न' में सिर हिलाया। मास्साब ने स्टील की दो चमचमाती थालियाँ पानी से धोईं। साफ़ कपड़े से पोंछते हुए दरी के ऊपर रख दीं। भात पक चुका था। गाँव में सभी के पास एलुमिनियम और काँसे की थालियाँ होती थीं। मैंने थाली उठाई और उसमें अपना चेहरा देखने लगा। मास्साब ने बताया कि यह स्टील है। एक धातु है। अब मास्साब एक-एक कर अपनी चीज़ों के बारे में बताने लगे। लेकिन मेरा ध्यान तो भात पर ही था। मास्साब ने दोनों थालियों में दाल-भात परोसा।

भात की खुशबू के सामने दाल कौन-सी बनी थी, यह जानने की मैंने कोशिश ही नहीं की! घर से भरपेट खाना खाकर ही मैं मास्साब के घर की ओर चला था। इसके बावजूद मैंने छककर दाल-भात खाया।

मैंने मास्साब से पहले ही अपनी थाली चाट डाली थी। दोबारा परोसे जाने का कोई विकल्प नहीं था, यह मैं पहले ही देख चुका था। मैं उठा और मास्साब के लिए धारे से एक बालटी पानी भरकर लाया। दोनों पतीले और दोनों थालियाँ मैंने माँजी। मास्साब मंद-मंद मुसकरा रहे थे। मज़ेदार बात यह थी कि बरतन माँजने का सही तरीका भी उन्होंने ही मुझे बताया था।

मैं उछल-उछलकर घर लौटा था। मैंने अपने पेट पर कई बार हाथ फेरा। गोल लोटे का आकार पेट पर उभर आया था। ताजवीर को मैंने सारा किस्सा सुनाया।

ताजवीर ने कहा–"कल से मैं भी आऊँगा। मास्साब के खाना खा लेने के बाद जो भात बचेगा, एक दिन तू खाएगा और एक दिन मैं खाऊँगा।"

शब्दार्थ

5. जीता-जागता;
6. आँखों के सामने

मुझे उसका सुझाव मानना पड़ा। हम दोनों स्कूल से तेज़ कदमों से घर लौटते। खाना खाते और मास्साब के घर की ओर चल पड़ते। एक दिन धारे से पानी मैं लाता और ताजवीर बरतन धोता। दूसरे दिन मैं बरतन माँजता और धारे से पानी ताजवीर लाता। एक दिन बचा-खुचा भात ताजवीर खाता। दूसरे दिन भात खाने की बारी मेरी होती।

आज ताजवीर विदेश में है। वह किसी बड़े होटल का सबसे बड़ा रसोइया है। मैं अध्यापक हूँ। तमाम किस्म के चावलों से बना भात खा चुका हूँ। लेकिन मास्साब की रसोई में बने भात की खुशबू जैसे दिल-दिमाग में आज भी ताज़ा है।

–मनोहर चमोली 'मनु'

लेखक-परिचय

मनोहर चमोली 'मनु'–जन्म: 01 अगस्त, 1973 पलाम, टिहरी गढ़वाल उत्तराखंड हुआ था। इनकी प्रमुख कृतियाँ– ऐसी बदली नाक की नथ, पूछेरी, सवाल दस रुपये का एवं उत्तराखंड की लोककथाएँ हैं। इन्हें साहित्य के क्षेत्र में अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से विभूषित किया गया है।

अभ्यास

बात पाठ की

मुख से

Oral Skills

इन प्रश्नों के उत्तर बताइए।

क. शहर जाने वालों की विदाई मोटर मार्ग तक कैसी होती थी?
ख. मास्साब से ताजवीर का पहले मिलना लेखक को क्यों पसंद नहीं आया?
ग. लेखक किस जिज्ञासा से मास्साब के घर गए थे?
घ. गाँव में लैंप कैसा होता था?

कलम से

Writing Skills

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. लेखक ने गुरु जी के बारे में क्या बताया?

....

ख. नए मास्साब ने बच्चों को क्या-क्या नई जानकारियाँ दीं?

ग. मास्साब पढ़ाते-पढ़ाते क्या-क्या करने लगते थे?

घ. लेखक का मास्साब के साथ भात खाने का अनुभव अपने शब्दों में लिखिए।

ङ. ताजवीर और लेखक ने मास्साब के घर जाने पर क्या समझौता किया था?

2. पाठांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

मुझे उसका सुझाव मानना पड़ा। हम दोनों स्कूल से तेज़ कदमों से घर लौटते। खाना खाते और मास्साब के घर की ओर चल पड़ते। एक दिन धारे से पानी मैं लाता और ताजवीर बरतन धोता। दूसरे दिन मैं बरतन माँजता और धारे से पानी ताजवीर लाता। एक दिन बचा-खुचा भात ताजवीर खाता। दूसरे दिन भात खाने की बारी मेरी होती।

आज ताजवीर विदेश में है। वह किसी बड़े होटल का सबसे बड़ा रसोइया है। मैं अध्यापक हूँ। तमाम किस्म के चावलों से बना भात खा चुका हूँ। लेकिन मास्साब की रसोई में बने भात की खुशबू जैसे दिल-दिमाग में आज भी ताज़ा है।

क. लेखक को ताजवीर का क्या सुझाव मानना पड़ा?

ख. काम के विषय में लेखक ने ताजवीर से क्या समझौता किया था?

ग. अब ताजवीर कहाँ है और क्या करता है?

घ. लेखक के दिमाग में आज भी क्या ताज़ा है?

3. किसने कहा? किससे कहा?

		किसने	किससे
क.	"तुम्हारे बाप-दादाओं को भी मैंने पढ़ाया है।"	....	....
ख.	"खाना खाया कि नहीं?"	....	....
ग.	"एक दिन तू खाएगा और एक दिन मैं खाऊँगा।"	....	....

श्रुतलेख : मुँह-अँधेरे, बख़्शीश, संवेदनशील, आश्रम, घुँघराले, एलुमिनियम, थालियाँ

बात सोच की *(कोई एक कीजिए)*

Analytical Skills

1. बच्चों के जीवन में एक अध्यापक का क्या योगदान होता है? अपने विचार लिखिए।
2. पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करते हैं। अनुभव ज्ञान को यादगार बनाते हैं। कैसे?

बात भाषा की

Language Skills

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

क. दोस्त – ....

2021/7/4 15:18

ख. अँधेरा – ....
ग. होशियार – ....
घ. खुशबू – ....
ङ. गर्व – ....
च. घर – ....

2. **क्रिया शब्दों से संज्ञा शब्द भी बनाए जाते हैं; जैसे– पढ़ना-पढ़ाई, चढ़ना-चढ़ाई इत्यादि।**

इन क्रिया शब्दों से संज्ञा शब्द बनाकर लिखिए।

क. पहनना .... ख. सूझना ....
ग. काटना .... घ. लगना ....
ङ. चलना .... च. मुसकाना ....

3. **निम्नलिखित वाक्यों में 'कि' अथवा 'की' से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

क. हमें लगा .... गुरु जी यूँ ही मज़ाक कर रहे हैं।
ख. एक दिन अचानक मैंने सुना .... नए मास्टर जी आ गए हैं।
ग. मास्साब की बाईं कलाई पर सोने .... घड़ी है।
घ. मास्साब ने बताया .... यह स्टील है।
ङ. उन्होंने बच्चों .... पत्रिकाओं के बारे में बताया।
च. खाना खाते और मास्साब के घर .... ओर चल पड़ते थे।

4. **वाक्य में कुछ अव्यय पद किसी शब्द विशेष पर बल देने के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें निपात कहते हैं; जैसे–ही, भी, तो, तक, मात्र आदि।**

मैं जैसा करता, वह **भी** वैसा **ही** करता। मैं घर में पढ़ने लगता, **तो** वह **भी** पढ़ने बैठ जाता।

रिक्त स्थानों की पूर्ति निपात से कीजिए।

क. मैं घूमने निकलता, ... वह .... पीछे-पीछे आ जाता।
ख. पोटलियों को मोटर मार्ग .... छोड़ने का काम हम बच्चों का .... होता है।
ग. हमें बस देखने का मौका कभी-कभी .... मिलता था।
घ. मेरे गुरु जी हमारे .... गाँव के थे।
ङ. दूर-दूर .... वे अकेले पढ़े-लिखे और संवेदनशील इनसान माने जाते थे।
च. इतना लंबा नाम .... किसी का हो सकता है!
छ. लेकिन मेरा ध्यान .... भात पर .... था।

5. **क्रिया अकर्मक और सकर्मक होती है। जिन क्रियाओं में कर्म नहीं होता, वे अकर्मक होती है; जैसे–**

मैं बुनियादी स्कूल में पढ़ता था।
क्या पढ़ता था?

उत्तर– 'x'–अर्थात अकर्मक क्रिया।

जिन क्रियाओं में कर्म होता है, वे सकर्मक होती हैं; जैसे–

- वे क्यारी बनाते।

  क्या बनाते?

उत्तर– 'क्यारी'– अर्थात सकर्मक क्रिया।

- **दिए गए वाक्यों में क्रिया पद को रेखांकित कर क्रिया का भेद भी लिखिए।**

क. मास्साब प्याज और मूली काट रहे थे। ......सकर्मक......

ख. मास्साब की रसोई में भात पक रहा था। ....

ग. हम एक-दूसरे से अपनी बातें साझा करते थे। ....

घ. मैं मकान के मुख्य द्वार पर खड़ा था। ....

ङ. वह दिन आएगा, जब चाँद पर भी शहर बनेंगे। ....

च. मास्साब ने दोनों थालियों में दाल-भात परोसा। ....

पाठ-अभ्यास के उत्तर

बात पाठ की

मुख से

(क) बूढ़े, बच्चे और जवान मुँह अँधेरे शहर जाने वालों को विदा करने जाते और गाँव में बनी चीज़ों की पोटलियाँ उन्हें दी जातीं।

(ख) बाल सुलभ ईर्ष्या-सी लेखक को अनुभव हुई होगी कि जातवीर मुझसे पहले क्यों आया या मुझे क्यों नहीं साथ ले गया।

(ग) मास्साब बच्चों को शहरों के किस्से-कहानी सुनाते थे। लेखक जिज्ञासा वश नई बातें सुनने तथा नई चीज़ें देखने की चाह से मास्साव के घर गए थे।

(घ) गाँव में ढिबरी और काँच की शीशी पर कैरोसीन लैंप जलते थे।

कलम से

1. (क) लेखक ने बताया कि गुरु जी उनके गाँव के ही थे। उनके बाल सफ़ेद थे। वे आँखों पर मोटा चश्मा, खादी का कुरता तथा चौड़ी मोहरी वाला लंबा खद्दर का पायजामा पहनते थे। उनके कंधे पर हमेशा एक झोला तथा दाएँ हाथ में लंबी छड़ी वाला छाता रहता था।

(ख) नए मास्साब ने बच्चों को कैमरे, दूरबीन, सिनेमा, रेल, अख़बार, पत्रिका आदि के बारे में जानकारियाँ दीं। वे हर चीज़ का चित्र ब्लैकबोर्ड पर बनाते।

(ग) मास्साब पढ़ाते-पढ़ाते किस्से कहानियाँ सुनाने लगते थे।

(घ) मास्साब ने दो थालियों में भात परोसा। भात की खुशबू के सामने दाल कौन-सी बनी है, यह ध्यान ही नहीं दिया और घर से खाना खाकर आए होने पर भी छक्कर भात खाया।

(ङ) ताजवीर और लेखक का मास्साब के घर जाने पर समझौता हुआ कि मास्साब के खाना खा लेने के बाद जो भात बचेगा एक दिन ताजवीर खाएगा और एक दिन लेखक और बाद में पानी लाने और बरतन माँझने का काम भी एक-एक दिन करेंगे।

2. (क) ताजवीर ने सुझाव दिया था कि आगे से वह भी मास्साब के घर चलेगा और एक दिन खाना वह खाएगा और एक दिन लेखक।

(ख) एक दिन धारे से पानी लेखक लाता और ताजवीर बरतन धोता और अगले दिन ताजवीर पानी लाता और लेखक बरतन धोता।

(ग) अब ताजवीर विदेश में है और किसी बड़े होटल का रसोइया है।

(घ) लेखक के दिमाग में आज भी मास्साब के बने भात की खुशबू ताज़ा है।

3.	किसने	किससे
(क)	गुरु जी ने	लेखक और अन्य छात्रों से
(ख)	मास्साब ने	लेखक से
(ग)	ताजवीर ने	लेखक से

बात सोच की

- छात्र स्वयं करें।

बात भाषा की

1. (क) मित्र, सखा (ख) अंधकार, तम (ग) बुद्धिमान, चतुर (घ) सुगंध, सुवास
(ङ) अभिमान, घमंड (च) गृह, सदन

2. (क) पहनावा (ख) सुझाव (ग) कटाव (घ) लगाव
(ङ) चलन (च) मुसकान

3. (क) कि (ख) कि (ग) की (घ) कि
(ङ) की (च) की

4. (क) तो, भी (ख) तक, ही (ग) ही (घ) ही
(ङ) तक (च) भी (छ) तो, ही

5. (ख) मास्साब की रसोई में भात <u>पक रहा था</u>। सकर्मक
(ग) हम एक-दूसरे से अपनी बातें <u>साझा करते थे</u>। सकर्मक
(घ) मैं मकान के मुख्य द्वार पर <u>खड़ा था</u>। अकर्मक
(ङ) वह दिन आएगा, जब चाँद पर भी शहर <u>बनेंगे</u>। सकर्मक
(च) मास्साब ने दोनों थालियों में दाल-भात <u>परोसा</u>। सकर्मक